18-19

Peer Reviewed Referred
and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

ISSN 2277-5730

AJANTA

Volume - VII, Issue - IV
Hindi / Kannada
October - December - 2018

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

AJANTA PRAKASHAN

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII | Issue - IV | Hindi / Kannada | October - December - 2018

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER -DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

Sr. No.	Name & Author Name	Page No.
१	वर्तमान में लोकतंत्र की स्थिती और गति **डॉ. बी. आर. नळे**	१-६
२	समकालीन स्त्रीपक्ष रचना का दक्षिण भारतीय परिपेक्ष्य इको फेमिनिज्म के संदर्भ में **प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर**	७-११
३	हिंदी में अनुवादित अनुठित कथाएं : 'फिनिक्स की राख से उगा मोर' **डॉ. नाजिम शेख**	१२-१६
४	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा और हिंदी उपन्यास **थोरात धर्मेंद्र पंडित**	१७-२१
५	दुष्यंतकुमार की गजलों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना **डॉ. अविनाश कासांडे**	२२-२५
६	हिंदी और मराठी साहित्य का तुलनात्मक अनुसंधान (श्रीलाल शुक्ल के 'रागदरबारी' और रंगनाथ पठारे के 'चक्रव्यूह' का तुलनात्मक अध्ययन) **सहा. प्रा. सौ. संजीवनी संदीप पाटील**	२६-३२
७	मन्नू भंडारी के 'बिना दीवारो के घर' नाटक में चित्रित दाम्पत्य जीवन **सुश्री अंजली महेश उबाले**	३३-३७
८	अज्ञेय की लंबी कविता 'असाध्यवीणा' का सौंदर्यशास्त्रीय अवलोकन **स्वाती ठकार**	३८-४३
९	रैदास बानी में अभिव्यक्त जीवन मूल्य तथा सामाजिक विचार **डॉ. सुनील बापू बनसोडे**	४४-५०
१०	विज्ञापन **सुषमा मारुति चौगले**	५१-५३
११	महाकवि 'आदेश' कृत 'सर्वदमन' सर्ग में अभिव्यंजित 'भारतीय संस्कृति' **श्री अक्षय राजेन्द्र भोसले**	५४-५९
१२	हिंदी पत्रकारिता : एक अनुशीलन **प्रा. अनिता संजय विखलीकर**	६०-६४
१३	साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा **डॉ. सूरज बाळासो चौगुले**	६५-६८

VOLUME - VII, ISSUE - IV – OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

९. रैदास बानी में अभिव्यक्त जीवन मूल्य तथा सामाजिक विचार

डॉ. सुनील बापू वनसोडे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर.

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य जगत में 'संत साहित्य' एक ऐसा उज्ज्वल अध्याय है जिसमें मानव कल्याण एवं लोक मंगल का भाव सर्वोपरि है। मध्यकाल में संत रविदास (रैदास) ने भारत में समाजसुधार का अलख जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अत: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिंदुत्व, हिंदू फांसीवादी एवं सांप्रदायिक कट्टरतावादी माहौल में संतों के जीवन एवं सामाजिक मूल्यों का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है। संगोष्ठी के संत साहित्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी संत रैदास के साहित्य में अभिव्यक्त जीवन मूल्य एवं उनके सामाजिक विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

1 'संत साहित्य' की पृष्ठभूमि

भारतीय साहित्य के इतिहास में 'संत साहित्य' को एक गरिमापूर्ण स्थान रहा है। 'संत साहित्य' से तात्पर्य है ऐसा साहित्य जो भारतीय संतों द्वारा लिखा गया हो या उनकी वाचिक सिद्धता के कारण जनमानस तक पहुँचा हुआ हो। 'संत' से तात्पर्य है, 'साधु' या जनसाधारण से अलग ताकत रखनेवाला सत् पुरुष। अर्थात् लोकमंगलमय एवं मानवतावादी दृष्टि रखकर लेखन करनेवाले को 'संत' कहने की परिपाटी भक्तिकाल की देन रही है। लेकिन हिंदी साहित्य में निर्गुण भक्ति करनेवालों को ही 'संत' की उपाधि देने का प्रचलन पहले चला आया है। अत: निर्गुण भक्तों भक्तों द्वारा लिखे गए साहित्य को 'संत साहित्य' कहने की परिपाटी निरंतर बनी रही है। 'संत साहित्य' को कालसीमा कालसीमा में बाँधे तो इसका अविर्भाव संवत् 1300 से संवत् 1700 मानना तर्कसंगत होगा। लेकिन 'संत साहित्य' के बीज 'सिद्ध साहित्य' और 'नाथ साहित्य' में मिलते हैं। इसीलिए तो भक्ति साधना को प्रभावित करने के कारण ही ही गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है, 'गोरख जगाये जोग, भगति भगायो भोग। सातवीं शती में सिद्धों एवं नौवीं सदी में नाथों की बानियों में ही 'संत साहित्य' की पार्श्वभूमि तलाशी जा सकती है। विदेशी आक्रमणों से आक्रांत भारतीय जनमानस को चेताने और उनमें एक नई ऊर्जा भरने का कार्य संतों ने किया। समाज के बीच रहकर आँखों देखी और कानो सुने यथार्थ को अपनी काव्य में उतारकर साहित्य को जनसामान्य तक पहुँचाने का काम संतों ने किया।

अत: 'संत साहित्य' सामाजिक चेतना का दस्तावेज है। रामानंदजी ने 'भक्ति द्रविडै उपजै, लाए रामानंद' अर्थात् दक्षिण भारत में जन्मी भक्ति की अजस्त्रधाराओं को समस्त भारत में पहुँचाने का कार्य अपने संप्रदाय एवं